International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 23-06-2019; Accepted: 26-07-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 149-152

पंडित दीन दयाल उपाध्याय व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. आशीष कुमार यादव
अतिथि विद्वान राजनीति विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
असंगठित समाज में मनुष्य के सुख की कल्पना नहीं की जा सकती। मनुष्य के अन्दर विश्व बन्धुत्व एवं विश्व कल्याण की भावना भी होनी चाहिए।
पंडित दीनदयाल उपाध्याय
अपने सुख की कल्पना तो सारा संसार करता है लेकिन संसार के सुख की कल्पना तो विरले लोग ही करते है, इन विरले लोगों में अलग सबसे ऊपर आता है पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का नाम जिनका सम्पूर्ण जीवन मानवता एवं विश्व बन्धुत्व में निकल गया। पंडित जी में सभी को साथ लेकर और सभी के साथ होकर चलने की अद्भुत क्षमता थी। उनका चिंतन केवल वर्तमान के संदर्भों में नहीं बल्कि भविष्य के परिणामों के साथ सम्बद्ध था। पंडित जी का चिंतन एक ऋषि के समान था। राष्ट्रीयता उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। राष्ट्रीयता के संदर्भ में उनका कहना था कि स्वदेशी पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। स्वयं पंडित जी स्वदेशी का जीता–जागता उदाहरण थे। वे स्वयं सम्पूर्ण जीवन स्वदेशी को आत्मसात किए रहे। और स्वदेशी के प्रति उनकी आस्था एवं विश्वास प्रगाढ़ था। उन्होंने माना कि स्वदेशी भारतीयों के लिए एक वरदान के समान है। जिसका उपयोग एवं उपभोग करें।

मृख्य शब्दः एकात्मकता, सांस्कृतिक निष्ठा, सनातन संस्कृति, एकात्म मानववाद, वसुधैव कुटुम्बकम।

प्रस्तावना
महान् राष्ट्रवादी विचारक पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर सन् 1916 को मथुरा जनपद के नगला चन्द्रभान में पंडित भगवती प्रसाद उपाध्याय के घर में हुआ था जो कि भारतीय संस्कृति और परम्परा का पालन करते थे। उनकी मेधा बचपन से ही प्रबल थी तथा उन्होंने हाईस्कूल (मिडिल), इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उन्होंने बाद में बी.ए. की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उस समय उनकी मेधा चरम पर थी। पंडित जी ने अत्यंत विषम् परिस्थितयों में अपनी पढ़ाई पूरी की।
पं. दीनदयाल उपाध्याय का चित्त समग्रता में एकात्म था इसीलिए रिक्तता वाले क्षेत्रों में स्वयं को समर्पित करने में वह बचपन से ही संलग्न थे। पं. दीनदयाल के छात्र जीवन में महान् सेवा व्रती का सान्निध्य उन्हें प्राप्त हुआ ही साथ ही राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराम बलिराम हेडगेवार का सान्निध्य भी उन्हें प्राप्त हुआ। छात्रावास में लगने वाली शाखा में वे प्रतिदिन जाते थे तथा उनका तन,मन और धन पूरी तरह से राष्ट्र को समर्पित हो गया। पंडित जी घर गृहस्थी की तुलना में देश की सेवा को अधिक श्रेष्ठ मानते थे। पंडित जी ने अपने जीवन के एक–एक क्षण को पूरी रचनात्मकता और विश्लेषणात्मक गहराई से जिया है। पत्रकारिता जीवन के दौरान उनके लिखे शब्द आज भी उपयोगी है। प्रारंभ में समसामयिक विषयों पर वह पॉलिटिकल डायरी नामक स्तम्भ लिखा करते थे। पंडित जी ने राजनैतिक लेखन को भी दीर्घकालिक विषयों से जोड़कर रचना कार्य को सदा के लिये उपयोगी बनाया है। पंडित जी ने बहुत कुछ लिखा है। जिनमें एकात्म मानववाद, लोकमान्य तिलक की राजनीति, जनसंघ का सिद्धांत और नीति, जीवन का ध्येय राष्ट्र जीवन की समस्यायें, राष्ट्रीय अनुभूति, कश्मीर, अखंड भारत, भारतीय राष्ट्रधारा का पुनः प्रवाह, भारतीय संविधान, इनको भी आजादी चाहिये, अमेरिकी अनाज, भारतीय अर्थनीति, विकास की एक दिशा, बेकारी समस्या और हल, टैक्स या लूट, विश्वासघात, दि टू प्लान्स, डिवैलुएशन, ए ग्रेटकाल आदि। उनके लेखन का केवल एक ही लक्ष्य था। भारत की विश्व पटल पर लगातार पुर्नप्रतिष्ठा और विश्व विजय। पंडित जी ने अनेक पत्र पत्रिकाओं का काफी लम्बे समय तक संपादन किया जिसमें लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रधर्म व दिल्ली से प्रकाशित पांचजन्य पत्र प्रमुख है। पंडित जी एक ऐसे महान् कर्मयोगी थे कि पत्र को समय पर निकालने के लिए उन्होंने रात भर कम्पोजिंग का कार्य किया। पंडित जी ने बहुत कम समय में ही सम्राट चन्द्रगुप्त जैसे चरित्र पर पुस्तक लिखकर भारतीय इतिहास के एक सांस्कृतिक निष्ठा वाले राज्य का चित्रण किया। निश्चित रूप से पंडित जी शब्द और कृति की एकात्मकता के सर्जक थे।
पंडित जी ने अपने लेखों व भाषणों में राजनीति में सुचिता पर भी विशेष बल दिया है विश्व मानवता को भारत की पुण्य धरती के लाखों ऋषियों के ज्ञान का सार तत्व एकात्ममानव दर्शन के रूप में पहुंचाने वाले पं. दीनदयाल उपाध्याय की जघन्य हत्या हुई और 11 फरवरी 1968 की रात परम ज्योति में एकाकार हो गई। उनका शव मुगल सराय रेलवे स्टेशन से प्राप्त हुआ था।

पं. दीनदयाल और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
पं. दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में एक सेवक की भाँति प्रवेश किया और वे अपनी प्रतिभा के बल पर एक दिन संघ के अध्यक्ष पद तक पहुँचे।
पिलानी में दीनदयाल जी के एक मित्र थे बलवंत महाशिन्दे। वैसे तो वे इंदौर के रहने वाले थे, लेकिन पिलानी से वे दीनदयाल जी के साथ अध्ययन करने कानपुर आए थे। उनकी अटूट मित्रता थी। उन्हीं बलवंत जी की प्रेरणा से दीनदयाल जी ने अपने कदम राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की और बढ़ाए वैसे मुख्य रूप से दीनदयाल जी का संघ में प्रवेश का श्रेय श्री भाऊराव जी देवरस को जाता है। वर्ष 1937 में जनवरी 14 अर्थात् मकर संक्रांति के दिन दीनदयाल जी ने संघ की प्रतिज्ञा ली। यहाँ उनका संघ से साथ प्रारंभ हुआ और संघ के लिए कर्तव्यनिष्ठता से कार्य करने का कार्य। इस समय वे बी.ए. में अध्ययन कर रहे थे, छात्रावास में रहते थे और छात्रावास में ही शाखा लगाई जाती थी। लेकिन

कुछ समय पश्चात् शाखा छात्रावास में न लग कर कानपुर के नवाबगंज नामक स्थान में लगने लगी। दीनदयाल जी ने पूर्ण निष्ठा से अपना जीवन इसमें लगाने का निर्णय लिया। वर्ष 1939 में जब एम.ए.करने के लिए वे आगरा आए तो वहाँ भी उन्होंने संघ के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूर्ण रूप से निभायी और आगरा के राजा की मंडी नामक स्थान पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की एक शाखा को स्थापित किया। लोगों को संघ के साथ जोड़ा। संघ के कार्य को आगे बढ़ाए। वे अपनी मेहनत व लगन से संघ के कार्यों में लग पाए। उनकी ख्याति संघ में बढ़ती गयी। दीनदयाल जी सहृदयी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। लोग उनके व्यवहार से मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उसी समय उत्तर प्रदेश से माननीय वापु राव मोघे, नानाजी देशमुख, बापू जोशी आदि बड़े –बड़े संघ के नेता संघ के कार्य के लिए आए हुए थे। दीनदयाल जी को उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने भी उनकी प्रशंसा की।

वर्ष 1942 में उत्तर प्रदेश के लखीमपुर जिले में दीनदयाल जी को संघ का प्रचार करने के लिए भेजा गया। उन्होंने वहाँ से प्रचारक के रूप में अपना कार्य प्रारंभ किया। यहाँ भी अपनी व्यवहार कुशलता एवं प्रतिभा से उन्होंने लोगों के हृदय में जगह बना ली। वे यहाँ पर दीनदयाल जी ने लोगों को संघ के प्रति आकर्षित किया और सैकड़ों लोग संघ से जुड़ने लगे।

महान व्यक्तित्व

स्वर्ण, अग्नि में तपकर कुन्दन बनता है अर्थात स्वर्ण तप कर ही उस आकार में ढ़लता है जिसे धारण करने से धारण करने वाले व्यक्तित्व में चार चाँद लग जाते हैं। लेकिन स्वर्ण को धारण करने योग्य बनाने के लिए पहले अग्नि में तपना पड़ता है।

उसी प्रकार जितने भी महापुरूष हुए हैं, वे भी सरलता से महान् नहीं हुए हैं और न ही ऐसे बने हैं कि लोग उनके आदर्शों को जीवन में उतारें। उन्होंने अपने जीवन को जिन्दगी की भट्टी में झोंक दिया। तब वे महान् व्यक्ति कहलाए और लोगों ने उनके कार्यों, उनके आदर्शों को अपनाया। अर्थात् महान त्याग करके महान बना जाता है महानता कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे बाजार से खरीदा जाए और महान बना जाए। इन्हीं महान पुरूषों की श्रृंखला में एक महान् पुरूष थे पं. दीनदयाल उपाध्याय।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे महान व्यक्तित्व के बारे में जितनी भी प्रशंसा की जाए या लिखा जाए वह वास्तव में बहुत थोड़ी होगी। कौन है इनके जैसा त्यागी, देश भक्त और संघर्षशील आत्मा, शायद कोई नहीं। जितना इन्होंने देश के लिए सहयेाग एवं समर्पण किया,उसकी गुण गाथा गाई नहीं जा सकती।

पं. दीनदयाल उपाध्याय एक महान् देशभक्त, कुशल संगठनकर्ता, मौलिक विचारक, दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ और प्रबुद्ध साहित्यकार थे। सादा जीवन उच्च विचार की जीती जागती प्रतिमा थे। सनातन संस्कृति के प्रतिनिधि और संदेश–वाहक थे आज प्रत्येक भारतीय इनके त्यागमय जीवन का ऋणी है। पं. दीनदयाल जी के व्यक्तित्व को शब्दों में पिरो पाना बड़ा कठिन है। वे एक कुशल संचालक, लेखक, पत्रकार, राजनीतिज्ञ, संगठनकर्ता थे। वे बहुत ही साधारण से दिखने वाले व्यक्ति थे। धोती–कुर्ता पहनते थे अर्थात् साधारण पुरूष थे लेकिन इस साधारण पुरूष में असाधारण विद्वता, महानता का पूर्ण समावेश था। उन्हें बाह्य आडम्बरों से कोई लेना–देना नहीं था। समाज का उत्थान उनका सर्वोपरि गुण था। वे कहते थे कि मनुष्य जन्म से नहीं अपितु कर्म से महान बनता है। कम बोलना, अधिक सुनना उनका विशेष गुण था।

भारत वर्ष के अनेक महापुरूषों की कड़ी में से एक मनके है पं. दीनदयाल उपाध्याय। दीनदयाल जी ने स्वयं को मानव–सेवा, समाज–सेवा और देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। आज देश के सामने अनेक समस्याएँ हैं, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, सामाजिक दायरे सिकुड़ रहे हैं, ऐसे में उचित मार्गदर्शन के लिए पं. दीनदयाल जैसे महापुरूषों की जीवनियाँ प्रेरणास्त्रोत हो सकती हैं।

पं. दीनदयाल जी सरल स्वभाव के व्यक्तित्व थे। उनकी कथनी और करनी में तनिक भी भिन्नता नहीं थी। वैसे तो पं. दीनदयाल जी के जीवन के विषय में अधिक पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन उन्होंने स्वयं जो लिखा वह उनके विचारों के रूप में हमारे लिए अमूल्य धरोहर है। उनके असामयिक अंत में राष्ट्र की बड़ी क्षति हुई, क्योंकि उनके जैस नेता बहुत विरले ही होते हैं जो अपना जीवन राष्ट्रहित के लिए समर्पित कर देते हैं।

एकात्म मानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय

पं. दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद के दर्शन पर श्रेष्ठ विचार व्यक्त किये हैं एकात्म मानववाद के विचार आज के युग में भी उतने ही प्रासंगिक है जितने कि उनके काल में थे। एकात्म मानववाद पर उनका कहना था कि हमारे यहां समाज को स्वयं भू माना है। राज्य एक संस्था के नाते है। राज्य के समान और संस्थायें भी समय–समय पर पैदा होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति इनमें से प्रत्येक संस्था का अंग रहता है। जैसे कुटुम्ब का मैं अंग हूँ। जाति व्यवथा हो तो उसका भी अंग हूँ। मेरा कोई व्यापार है तो उसका भी अंग हूँ। समाज, समाज के आगे पूर्ण मानवता पर विचार करें तो उसका भी अंग हूँ। मानव से बढ़कर यदि हम इस चराचर जगत का विचार करें तो मैं उसका भी अंग हूँ। वास्तविकता यह है कि व्यक्ति नाम की जो वस्तु है, वह एकांगी नहीं बल्कि बहुअंगी है परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि वह अनेक अंगों वाला होकर भी परस्पर सहयोग, समन्वय को पूरकता और एकात्मकता के साथ चल सकता है। यह व्यक्ति को कुछ गुण मिला हुआ है।

जो व्यक्ति इस गुण का ठीक से उपयोग कर ले वो सुखी तथा जो गुण का ठीक प्रकार से उपयोग न कर सके वह दुःखी। उसका विकास ठीक नहीं होगा। पं. दीनदयाल उपाध्याय की तत्त्व दृष्टि थी कि भारतीय संस्कृति समग्रवादी है। यह सार्वभौमिक भी है। पश्चिम की दुनिया में हजारों वाद हैं। पूरा पश्चिमी जगत विक्षिप्त है। पश्चिम के पास सुस्पष्ट दर्शन का अभाव है। वही अभाव यहाँ के युवकों को भारत की ओर आकर्षित करता है। अमरिका का प्रत्येक व्यक्ति आनंद की प्यास में भारत की ओर टकटकी लगाये हुए है।

भारत ने सम्पूर्ण सृष्टि रचना में एकत्व देखा है। भारतीय संस्कृति इसीलिए सनातन काल से एकात्मवादी है। पंडित जी के अनुसार सृष्टि के एक–एक कण में परम्परावलम्बन है। भारत ने इसे ही अद्वेत कहा है। भारत ने सभ्यता के विकास में परस्पर सहकार को ही मूल तत्व माना है। वस्तुतः एकात्म मानव दर्शन ही है। किन्तु इसे 'एकात्म मानववाद' इसलिए कहा गया कि पंडित जी भारत की राष्ट्रवादी पार्टी भारतीय जनसंघ के शिखर पुरूष थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानव के सर्वांगींण विकास और अभ्युदय के लक्ष्य भी भारतीय दर्शन से ही निरूपित किये थे। पं.दीनदयाल जी ने कहा था कि विचारों के विकास का कोई अन्त नहीं होता और कोई भी विचार पुराना का पुराना जैसा पहले था नहीं हो सकता उसमें परिवर्तन निश्चित है। उनका कहना था कि बाहर के विचारों को देशानुकूल और अपने यहां के विचारों को युगानुकूल रखना हमारी कार्यपद्धति होनी चाहिये। वे पश्चिमी अन्धानुकरण के विरोधी थे। उनका कहना था कि भारत को अमेरिका और रूस नहीं बनाना है। बल्कि भारत को वैश्विक ज्ञान और अपनी धरोहर के मदद से हम एक ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते हैं जो अपनी अतीत की सभी यशोगाथाओं से अधिक गौरवशाली होगी, पिछले 200 वर्षों में जिनके आधार पर समाज में बदलाव आया। साम्राज्य निर्माण के बाद मजहबी विचारों का प्रचलन शुरू हुआ। अरब से इस्लामी विचारधारा और

इंग्लैण्ड से ईसाइयत के विचारों का प्रचार प्रसार शुरू हुआ। इसके बाद विभिन्न प्रकार की आर्थिक और राजनैतिक विचारधारायें शुरू हुई। जैसे पहले पोप राजा भी बना और धर्मसंरक्षक भी फिर बाद में डेमोक्रेशी आयी। इसके बाद समाज ने विज्ञान और तकनीकि में भी विकास किया। पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने मानव जीवन को मानव, जीवन को मानव, समाज और सृष्टि इन तीन श्रेणियों में बांटा। पश्चिमी देशों में मानव को पोप की संतान मानते हैं। उनके जीवन का उद्देश्य ही अर्थ और काम है। उनकी उपभोगवादी मानसिकता है वे प्रकृति को जड़ समझते हैं। उनकी टेक्नोलॉजी भी ऊर्जाभक्षी एवं पर्यावरण विरोधी है। अपने यहाँ मनुष्य के मन को सुख चाहिए। मन, बुद्धि एवं आत्मा इन तीनों का समन्वय जरूरी है। एकात्म मानववाद में मनुष्य को देवता माना गया है।

सुख के कई प्रकार गिनाये गये है। कर्तव्य पालन के साथ कष्ट में भी आत्मिक सुख की अनुभूति। हमारे यहां ब्रहमचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास इन चार आश्रमों की व्यवस्था है। भारत में प्रकृति को अध्यात्म के साथ जोड़कर देखा गया है एवं संयमित उपभोग को मान्यता दी गई है। पश्चिम में व्यक्ति अंतिम इकाई है, भारत में अंतिम इकाई परिवार है। वहां परिवार व्यवस्था टूट गयी है। उपयोगिता के आधार पर संबंध चलता है, जिसके परिणाम स्वरूप तमाम समस्यायें घर कर गयी हैं। व्यक्ति कर्ममय जीवन द्वारा समाज में योगदान करता है। समाज में भी मन, बुद्धि, आत्मा है। समाज में भी पुरूषार्थ है। देश धर्म व्यक्ति समाज के शरीर हैं। लोगों की सही सोच समाज का मन है। मानव जीवन के सुख के लिए जो भिन्न प्रयत्न चले अनुभव आया कि एक नये विचार की आवश्यकता है। पं.दीनदयाल जी ने कहा था कि अधूरी सोच के कारण ऐसा हुआ है। शांति, विकास एवं पर्यावरण एक दूसरे के पूरक है। विज्ञान और मजहब ही भयानक संकट की जड़ है।

पश्चिम के लोग प्रकृति को जड़ मानते हैं। उनकी टेक्नोलॉजी अधिक ऊर्जाभक्षी एवं पर्यावरण विरोधी है। उनके अनुसार पूरी दुनिया उपभोग के लिए ही है। भारत ने सृष्टि को सजीव इकाई माना है। प्राणि सृष्टि, वनस्पति सृष्टि, मनुष्य सृष्टि ऐसा विभाजन भी किया है, और ये एक दूसरे के पूरक भी हैं। यह हमारे देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर जगदीश चन्द्र बसु ने यह सिद्ध कर दुनिया को दिखा भी दिया। उनके यहां इसके आधार को भौतिक माना है और इसका एक दूसरे का कोई संबंध नहीं मानते हैं।

पं.दीनदयाल जी ने कहा था कि हम नवनिर्माण के वाहक हैं। विंध्वस के नहीं, और अपने यहां के मूल्यों को संकल्पना के माध्यम से समझना होगा। आज हमें देश में एक नई सामाजिक संरचना खड़ी करनी है। सभी विविधताओं की रक्षा करते हुए नई आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक संरचना करनी है, यही भारत की नीति है।

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में सुख चाहता है। मनुष्य संसाधनों से सुखी नहीं हो सकता है। वैभव संपन्नता सुखी रहने का आधार नहीं है। मनुष्य को जीवन में सुखी रहने के लिए उसे समाज में एकता स्थापित करनी चाहिए। असंगठित समाज में मनुष्य के सुख की कल्पना नहीं की जा सकती। मनुष्य के अंदर विश्व बंधुत्व एवं विश्व कल्याण की भावना भी होनी चाहिए अन्यथा विश्व में अशांति रहेगी तो देश व समाज भी स्वस्थ नहीं रह सकता। इसलिए मनुष्य का संबंध सीधा पूरे विश्व से है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने 1965 में चार व्याख्यान दिए, वही बाद में एकात्ममानववाद कहलायें, क्योंकि मार्क्सवाद, लेनिनवाद, साम्राज्यवाद इन सभी विचारधाराओं से लोगों का मोहभंग हो चुका था। जनता इन विचारों से तंग आ चुकी थी उसे एक नई रोशनी की तलाश थी, जो पंडित दीनदयाल जी ने एकात्ममानवाद के रूप में प्रज्जवलित कर दिखाई। उन्होंने इन सभी विचारों से ऊपर उठकर सोच समझकर चिन्तन–मनन कर एक जीवन शैली लोगों के समक्ष प्रस्तुत की जिससे अपने राष्ट्र संस्कृति एवं धर्म का संरक्षण करते हुए पूरे विश्व का परिमार्जन कर उसकी सेवा एवं उनके कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहा जा सके।

''मानवता'' शब्द का सरल शब्दों में मतलब है मानव की एकता इंसानियत यानि मानवता हर मानव चाहे वह किसी भी धर्म का हो जाति का हो, कोई भी देश, शहर का हो उसका एक मात्र मकसद होना चाहिए मानव एकता। सारे संसार में मानव परिवारों में कई प्रकार की समानतायें और असंमानताएं होती हैं। हर मानव की शक्ल सूरत, रंग–रूप, शारीरिक बनावट, रहन–सहन, सोच–विचार, बोली–भाषा आदि में समानतायें भी होती है। और उनमें असमानताएं भी होती हैं लेकिन प्रभु ने हम सबको पांच तत्वों से ही बनाया है सब में इस निरंकार प्रभु का ही नूर होता है। आत्म भाव से हर मानव एक समान है।

''इक्कों नूर है, सब दे अन्दर नर है चाहे नारी ऐ''
ब्रहमाण, खतरी, वैश्य, हरिजन, इक दी खलकत सारी ऐ
''माटी एक अनेक भांति करि साजी सजनहारे' एक ही माटी है,

एक जैसे तत्व है। इसमें कोई अंतर नहीं। जब यह सच्ची बाते हमारे मन में स्थापित हो जाती हैं, हम इंसानियत की राह पर अग्रसर हो जाते हैं। भाईचारा, स्थापित हो जाता है। अनेक योनियों में जन्म लेने के बाद इंसान को मानव शरीर मिलता है उन सभी योनियों में इंसानी योनी को उत्तम समझा जाता है अवर जोनी तेरी पनिहारी, इस धरती पर तेरी सिक्दारी' मानव धर्म ने इंसान को इंसान से प्यार सिखाया है। मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना, हम सब एक धरती पर बसने वाले है इस धरती पर जन्म लेकर हम सब साथ–साथ जी रहें है हम सबको एक परमात्मा का अंग बनकर जीना है।

मानवता से बड़ा जीवन में कोई धर्म नहीं होता है। मगर इंसान मानवता के धर्म को छोड़कर मानव के बनाये हुए धर्मों पर चल पड़ता है। क्योंकि यह सब उसके अज्ञानता के परिणाम होते हैं। इंसान इंसानियत को छोड़कर मानव धर्मों में जकड़े जाते हैं। धर्मों की आड़ में अपने मनों के अंदर बैर, निंदा, नफरत, अविश्वास जात–पात के भेद के कारण अभिमान को प्राथमिकता देता है इसके कारण ही मानव मूल मकसद को भूल जाता है। मानव जीवन में मानव प्यार करना भूल गया है। अपने मकसद को भूल गया है। अपने जन्मदाता को भूल गया है। इससे मानव के मनों में हमेशा दानवता वाले गुण विधमान होते जा रहे हैं। आज धर्म के नाम पर लोग लहू–लुहान हो रहे हैं। आज हम मानवता को एक तरफ रखकर अपनी मनमर्जी धर्म को कुछ और ही रूप दे रहे हैं जिस कारण इंसान और इंसान में दूरिया बढ़ रही हैं कहीं जाति पाति को मानकर, कहीं परमात्मा के नामों को बांटकर तो कभी किसी और कारण से। इन कारणों से दिलों में नफरत बढ़ती जा रही है, इंसानियत खत्म होती जा रही है। जहाँ पर इंसानियत खत्म होती है वहां पर धर्म भी खत्म हो जाता है। इंसान इंसानियत को भूल गया है जो पैगाम हमेशा दिया जा रहा है कुछ भी बनो बधाई है पर सबसे पहले बस इंसान बनो। उसको अपने मन में से अपने स्वार्थो को निकाल दो।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी मानव को ब्रहम ज्ञान देकर उसके मन के विचारों में रहन–सहन, सोच–समझ में तथा उसकी जीवन शैली में बदलाव करते है। इंसान में सिर्फ ज्ञान के बाद ही अच्छे विचार तथा भावनायें प्रवेश करती हैं। ब्रहम ज्ञान के बाद ही और संत महापुरूषों की कृपा से ही नम्रता, विश्वास, सम्दृष्टि प्यार, सहनशीलता, परोपकार, आदि दिव्य गुणों के कारण ही मानव मानव के समीप आता है और उनके दिलों की दूरियां खत्म होती है इस सद्व्यवहार से ही मानव एकता कायम होती है।

''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना मानव जीवन में साकार हो पं. दीनदयाल उपाध्याय ये ही आशा करते है हम सारे परोपकार का

भाव और ज्ञान का उजाले से हमारा जीवन सुखमय रहे। पं. दीनदयाल उपाध्याय जब दिलों के तार जुड़ जाते है तो हर मानव के लिए प्यार नम्रता, श्रद्धा और प्रेम का विकास हो जाता है ऐसा वातावरण बन जाता है फिर अहम, बैर, नफरत, की भावना अपने आप खत्म हो जाती है, एकता की भावना बन जाती है। ये ही सभी महापुरूषों की महान् देन होती है। मानवता की मजबूती के लिए मन में सद्भाव धारण करने होंगें।

सत्ता तथा धन के केन्द्रीयकरण का विरोध

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का मानना था कि सत्ता तथा धन का केन्द्रीयकरण नहीं होना चाहिए। सत्ता के केन्द्रीयकरण से कार्य प्रभावित होते हैं। क्योंकि सत्ता यदि एक व्यक्ति के पास होती है तो अनियमितता एवं भ्रष्टाचार की संभावना बढ़ जाती है और धन का दुरूपयोग होने लगता है। पंडित जी का मानना था कि विश्व की प्रशासनिक संस्कृति से भारत की प्रशासनिक संस्कृति भिन्न है। हमारी प्रशासनिक संस्कृति के साथ सेवा भाव एवं नैतिकता जुड़ा हुआ है जिसका परित्याग नहीं किया जा सकता है। शासन तथा प्रशासन का एक लक्ष्य होना चाहिए ''मानवसेवा''। सत्ता तथा धन का केन्द्रीयकरण नहीं होना चाहिए। इसके कारण अमीर और अमीर तथा गरीब और गरीब होंगें। समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग धन के अभाव से पीड़ित होगा। धन का अभाव तथा धन का प्रभाव दोनों ही हानिकारक है। धन के अभाव में समाज तथा व्यवस्था खोखली हो जाएगी। लेकिन धन के लिए स्वदेशी के मार्ग को प्रोत्साहन देना चाहिए। क्योंकि स्वदेशी राष्ट्र को नई ऊँचाईयों पर ले जाता है और नई दिशा तथा विकास प्रदान करता है।

श्रम प्रधानता पर बल

गांधी जी का अनुसरण करते हुए पं. दीनदयाल उपाध्याय जी श्रम प्रधानता पर बल दिया है। उनका कहना था कि समाज, राज्य, राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति कार्य करे। क्योंकि राष्ट्र की उन्नति प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने में है, राष्ट्र की उन्नति एवं अवनति व्यक्तियों के चरित्र तथा कार्यों पर निर्भर करता है। पंडित जी का मानना था कि लोग दिखावे से दूर रहें तथा पूँजीवादी प्रवृत्तियों की अंधाधुंध नकल न करें। क्योंकि पूँजीवादी प्रवृत्ति मानसिक विकार उत्पन्न करती है। इस प्रवृत्ति से समाज के लोगों में मनोविकार उत्पन्न होता है जो राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध होता है। पूँजीवादी संस्कृति उपभोक्तावादी संस्कृति पर आधारित होती है। जिससे सामाजिक एवं व्यैक्तिक मूल्य प्रभावित होते हैं। पंडित जी का कहना था कि उपभोक्तावाद पश्चिम की ओर धकेल कर अंततः हमें अपनी राष्ट्रीय जड़ों से काटकर हमें हमारी संस्कृति एवं जीवनमूल्यों से अलग कर देगा जिससे समाज दिशाविहीन हो जाएगा। और हमारी संस्कृति को नुकसान पहुँचाएगा।

निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी में राष्ट्रीयता बचपन से ही कूट–कूट कर भरी थी। चाहे संविधान निर्माण का मुद्दा हो अथवा शासन प्रणाली की बात हो, केन्द्र राज्य संबंधों की बात हो या अन्य कोई समस्या हो। इन सभी बातों को उन्होंने बड़ी सहजता से लिया। उनके विचार में संविधान स्वयं भारतीयों का नहीं है। भारतीय संविधान में पूर्णतः भारत की संस्कृति, परम्परा, मानसिकता, उसके अतीत आज की आवश्यकताओं और भावी आकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब नहीं है। पंडित जी का मानना था कि संविधान में भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं का स्पष्ट रूप से झलक दिखाई देनी चाहिए। यदि संविधान भारतीय संस्कृति के अनुरूप होगा तो इसका स्पष्ट झलक स्वदेशी में दिखाई पड़ेगा। हम परराष्ट्र पर आश्रित नहीं होंगें, हमारी सोच स्वदेशी के प्रति ज्यादा होगी बजाए कि परराष्ट्र के हम जिस प्रकार से पश्चिम का अंधानुकरण कर रहे हैं उसका परिणाम हमारी संस्कृति पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है।

छोटे–छोटे राज्यों का गठन पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने देश में छोटे छोटे राज्यों का बनाने की बात की। उनका मानना था कि राज्यों अथवा प्रशासनिक इकाइयों का गठन छोटे–छोटे जनपदों में, उस स्थान विशेष परिस्थिति को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। जातियों और भाषाओं को इसका आधार नहीं बनाना चाहिए। राज्यों एवं प्रशासनिक इकाईयों का विकेन्द्रीकरण किया जाना चाहिए। यदि सही तरीके से विकेन्द्रीकरण होगा तो शासन तथा प्रशासन सुचारू रूप से चलता रहेगा। जिससे भारत खुशहाल एवं समृद्ध होगा। जिससे लोगों में राष्ट्र के प्रेम और सद्भाव उत्पन्न होगा, लोग राष्ट्र से प्रेम करने लगेगें।

संदर्भ सूची

1. सांबला, मनोज, युगपुरूष पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राज पब्लिकेशन, दिल्ली, 2017.
2. मिश्रा, कौशल किशोर, राम शैलेश कुमार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन, राज पब्लिकेशन, दिल्ली, 2019.
3. सिंह, दीनानाथ, हरनाम सिंह, पंडित दीनदयाल उपाध्याय की चिंतन दृष्टि, हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2017.
4. सिंह, अमरजीत, मैं दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2018.
5. शर्मा, महेश चन्द्र, आधुनिक भारत के निर्माता पंडित दीनदयाल उपाध्याय, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, 2017.
6. उपाध्याय, दीनदयाल, एकात्म मानववाद तत्व मीमांसा सिद्धांत विवेचन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2016.
7. शर्मा, महेश चन्द्र, दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानववाद तत्व मीमांसा सिद्धांत विवेचन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2012.
8. उपाध्याय, दीनदयाल, दीनदयाल उपाध्याय, संपूर्ण वाड्मय (15 खण्डों) प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 2016.
9. उपाध्याय, दीनदयाल, पॉलिटिकल डायरी, सुरूची प्रकाशन, दिल्ली, 2014.
10. उपाध्याय दीनदयाल, एकात्मनावाद, हिन्दी साहित्य सदन, दिल्ली, 2008.